

पारिवारिक समस्यायें और समाधान

जैसे कि हम सबको कहते ही है कि किसी भी देश का सुधार करना हो या किसी समाज में सुधार करना हो तो यही कहने में आता है कि तो यही कहने में आता है कि पहले परिवारों में सुधार लाया जाये। कई बार हम व्यक्तिगत सुधार की बात भी करते हैं कई बार जब हम परिवार की बात करते हैं तो आजकल परिवार में अचानक से ऐसी कई समस्यायें आ जाती हैं जिनके बारे में पहले ना कभी सुना होता ना ही उन के बारे में कभी सोचा होता है। अतः पहले हम कुछ कॉमन समस्यायें जो भी प्रायः आती हैं परिवारों में उनके बारे में चर्चा करेंगे। पहले तो हमें समस्याओं तथा उनके आने के कारणों का पता हो तब ही हम समाधान कर सकते हैं। कई बार कुछ समस्यायें ऐसी होती हैं जिनका समाधान सहज एवं शीघ्र नहीं होता उसके लिए धीरज रखकर उचित समय का इंतजार करना पड़ता है सहन करना या समाना होता है। फिर परिणाम देखने में आता है।

आजकल परिवार की प्रथम या मूल समस्या है कि परिवार में दिनचर्या ठीक नहीं होती है जो पहले गायन था की जल्दी सोओ जल्दी उठो। आज दिनचर्या एकदम इसके विपरीत है। देर से सोना देर से उठना यह बड़ी समस्या है कई बार परिवार में यदि कोई जल्दी उठता भी है तो बाकि अन्य कहते हैं यह हमें डिस्टर्ब करता है समय पर सोने नहीं देते हैं ये भी वो समस्या मानते हैं उनके लिए उठने को इसलिए उनके लिए वो कहते हैं कि ये ऐसे स्थान पर ना जायें जहाँ जल्दी उठने को कहते हैं। वैसे तो देरी से उठना ये खराब आदत है जल्दी उठना अच्छी आदत है। परन्तु आज जमाना बदल गया है कलियुग है इसलिए देरी से उठने वाले जल्दी उठने वाले को अच्छा नहीं मानते उन्हें ये खराब आदत लगती है। अतः दिनचर्या सारी अपसेट रहती है देर से उठने से जिससे यह एक बड़ी समस्या है। दूसरी बात आजकल घर- परिवार का वातावरण भी ठीक नहीं है। कहते हैं जैसी वार्ता होती है वातावरण ऐसा ही बनता है लेकिन हम समझ सकते हैं कि आजकल की वार्ता कैसी है तेरी-मेरी, इधर-उधरकी, इसकी – उसकी। ये ना भी हो तो टी.वी. है इंटरनेट है जो भी वातावरण को भारी कर रहे हैं टी.वी पर आजकल के सीरियल में ऐसी ही नकारात्मक वार्ता चलती है जो घर परिवार के वातावरण को बिगाड़ रही है। तीसरी समस्या है कि हरेक में देह अभिमान होने के कारण हरेक अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है मेरी ही बात मानी जाए मैं जो कहती हूँ या करती हूँ वही राईट है। आप देखो प्रायः हर परिवार में ऐसी प्रभुत्व जमाने वाली अपनी बात मनवाने वाली कोई ना कोई आत्मा तो है ही जहाँ प्रभुत्व होता है या मैं बड़ा हूँ, मैं सत्य हूँ, मैं ही समझदार हूँ तो वहाँ यह भाव रहता है कि मैं जो कर रहा हूँ वैसा ही सब करें या मैं जो कह रहा हूँ उस अनुसार ही परिवार का हर सदस्य चलें। कहावत भी है ना मैं भी रानी तू भी रानी कौन भरेगा पानी।

मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है कि एक बहन ने मुझे कहती है एक स्थान पर दीदी आपको पता है कि मेरी आयु अब 45 से ऊपर है अब मैं झाड़ू –पोचा, बर्तन इस तरह वाली सेवा नहीं कर सकती। आप तो शायद जब 30-35 वर्ष की ही होगी तब आप ने ये सब बंद कर दिया होगा। तो मैं तो फिर भी 20-25 वर्षों से ये सेवा करती आ रही हूँ। अब तो मेरा शरीर इतनी स्थूल सेवा नहीं कर सकता। फिर दूसरे स्थान पर मैं गयी तो बहन कहती है कि दीदी मैं 60 साल की हो गयी हूँ अब स्थूल कार्य मेरे से नहीं होता मैंने कहा ठिक है मैं जवान हूँ हो गई हूँ क्योंकि बुढ़ापे के बाद भी मैं कर लूंगी। वैसे देखा जाए तो सब ठीक ही कह रहे हैं क्योंकि शरीरों में अब ताकत नहीं है परन्तु यह तो एक बड़ी ही समस्या है वो तो अपनी तरफ से राईट ही कह रहे हैं अब उनका ही माना जाए तो घर परिवार कैसे चलेगा। एक समस्या और भी आ रही है कि घरों में संकीर्णता बढ़ती जा रही है दिल ही छोटे होते जा रहे हैं। पारिवारिक दायरा छोटा होता जा रहा है। व्यक्ति स्वयं में ही केन्द्रित होता जा रहा है। ये मेरी फैमिली है ये मेरी चीज है, वो मेरी चीज है परन्तु पहले ये सब कुछ नहीं होता था बड़ी विशालता थी सबके दिलों में-दृष्टिकोण में परन्तु अब संकुचित व संकीर्ण होते जा रहे हैं सब इसके साथ-साथ जिद्द भी बढ़ती जा रही है कि मैं जो कह रहा हूँ वैसा क्यों नहीं होता जिद्द पकड़ लेते हैं कि मैं जो कह रहा हूँ वैसा ही होना चाहिए। साथ में हर बात को सिद्ध करने में आ जाते हैं। बाबा तो कहते कि सिद्ध करने वाले कभी भी प्रसिद्ध नहीं होते पहले तो सिद्ध पुरुष जंगलो में गुफाओं में अपनी कुटियाओं में मिलते थे अब तो हर घर में सिद्ध-पुरुष मिल जाते हैं सिद्ध करते रहते हैं हर बात को। एक

समायोजन का अभाव है आजकल। कोई भी, किसी को भी अब एडजस्ट नहीं करना चाहता। बड़ी जल्दी एक दूसरे पर डाउट कर लेते हैं भ्रान्तियां बहुत एक दूसरे के प्रति रहती हैं। भ्रान्ति के साथ-2 बहकना- बहकाना भी आजकल खुब होता रहता है। आज मेरा और आप का बहुत स्नेह है परन्तु कोई तीसरा हम दोनो में से जाकर कहता है कुछ कान भरता है और हमारी आपस में टूट जाती है उसके मन में रहता है भल मेरे से ना बनें परन्तु आपस में इनकी मित्रता टूटनी चाहिए। तो ऐसे बहकाना ये भी परिवारों में चलता है आजकल फिर है चुगली की आदत इससे तेरी मेरी बातों में टाईम बहुत जाता है। टांट मारने में भी आजकल कई तो बहुत आगे हैं। माता कहती मेरी साड़ी बहुत सुन्दर है अच्छी है सामने वाली फौरन कहती है हाँ बहुत सुन्दर है 2000 की घर में भी, किचन वर्क में भी पहनती है। तो देखो बात सुन्दरता की थी, फिर 2000 की साड़ी की बात कहा से आई तो ये एक दूसरे को टांट कसते हैं।

धीरज व सहनशीलता का तो जैसे अकाल ही पड़ता जा रहा है। सहयोग व सम्मान देने की भावना घटती जा रही है। बस सब ड्यूटी कॉन्सियस बनते जा रहे हैं। अपनी ड्यूटी पूरी की बस हो गया। पहले तो अड़ोसी-पड़ोसी को भी सहयोग देते थे राह चलते अजनबी को, अपरिचित को जरूरत के समय सहयोग देते थे। फिर सम्मान भी एक दूसरे के प्रति या बड़ों के प्रति अब कम होता जा रहा है। मुझे सम्मान मिल रहा है तो बड़े ही खुश हैं अच्छा लगता है पर मुझे जब सम्मान देना चाहिए सामने वाले को तो वो नहीं होता। किसी के कहने पर कहेगें चलो आप बोलते हो तो कर देती हूँ वैसे सम्मान देने जैसी कोई बात है नहीं इनमें राशनिंग करते हैं जैसे सहयोग और सम्मान की। उस राशन कार्ड पर तो जरूरत के समय अल्पमात्रा में भी फिर भी मिल जाता है परन्तु सहयोग-सम्मान मिलने का तो कोई डिपो या राशन स्टोर है ही नहीं तो हम देखते हैं सहयोग ओर सम्मान का अभाव है।

आजकल भाव-स्वभाव की टक्कर भी परिवारों में होती रहती है। एक-दूसरे से संस्कार नहीं मिलते हैं। चलो मेरा संस्कार अपना है आप का अपना संस्कार है लेकिन फिर भी टक्कराव होता रहता है हर समय। आप सोचो जहाँ यह सब हो रहा हो वे घर, घर लगेगा या मछली बाजार। क्या लगेगा। शेयर बाजार में चलता है कि ये भाव हो गया ये भाव हो गया, इसके दाम गिर गये इसके चढ़ गये। ऐसे सम्बन्धों में भी उतार-चढाव होता रहता है टक्कर होती रहती है संस्कारों की।

फिर है प्रेम व नेम में संतुलन का अभाव। प्रेम भी होना चाहिए परन्तु नेम भी होना चाहिए। लव है तो लॉ भी हो। लव व लॉ का बैलेंस ना होना ये भी बहुत बड़ी समस्या हो गई है। गलत फहमी व सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास ये भी बड़ी समस्यायें पैदा कर रहा है। इससे मन में गांठों में गांठें पड़ती जाती हैं तथा आपस की दूरियां बढ़ती जा रही हैं कोई नई आती है तो कहते हैं मुझे नहीं लगता वो ठिक है सुनने वाली कहेगी लग तो मुझे भी कुछ ऐसा ही रहा है तीसरी कहेगी हाँ-हाँ बिल्कुल ठिक समझ रहे हो मैं जानती हूँ उन को अच्छी तरह से अन्दर से बाहर से। बस हो गया ग्रुप तैयार। बस हो गया ग्रुप तैयार ये गलत फहमी है। कभी भी किसी के भाग्य को तुकराओ नहीं।

कई बार पर्सनल वार्तालाप में आपस में संकोच होता है। चलो कोई बात हो गई है आपस में बैठ कर बात कर लो परन्तु आपस में एक दूसरे से इतने घुले मिले नहीं हैं फ्री नहीं हैं आपस में। दो बहन एक ही सेवाकेन्द्र पर रहती हैं एक के मन में दूसरी के प्रति कुछ चल रहा है और दूसरी के मन में पहली के प्रति कुछ आ रहा है। परन्तु ना वो उस से बात करती ना वो उस से बात करती ना वो उस से करती बस अन्दर ही अन्दर कुछ चल रहा है एक दूसरे के प्रति मेल-जोल की भी कमी रहती है एक कहे खाना खा लो दूसरी कहेगी आप खा लो आप को भुख लगी है। मैं आधे घंटे बाद खाऊँगी वो कहेगी चलो मैं भी आधा घंटे बाद ही खा लूँगी। फिर कहेगी कुछ नहीं पता शायद मैं एक घंटे बाद या शायद ना भी खाऊँ। माना मेल जोल की कमी है और पहले परिवार इकट्ठा बैठते थे और इकट्ठा ही खाते-पीते थे।

फिर कई बार व्यसनी भी होते हैं। किसी को तो गप्पे मारने का भी व्यसन होता है। किसी को गोल गप्पे खाने का व्यसन होता है। किसी को तेरी-मेरी बातें करने का व्यसन भी होता है उनका दिल इसी बात में ठंडा होता है। ये ना करें तो जैसे चैन ही नहीं मिलता। व्यसन भी कई प्रकार के होते हैं। एक तो घर में एक माई आती थी बर्तन मांजने वो लगभग 10 घरों में बर्तन मांजती थी। 10 घरों के समाचार होते थे उसके पास जैसे की उस

घर में सास बहु का झगड़ा हो गया या आज उस की बेटी ससुराल से लड़कर वापिस घर आ गयी माना 10 ही घरों के समाचार होते थे उस के पास तो एक माता समाचार सुनते सुनते व्यसनी हो गई। किसके घर में क्या चल रहा है किसकी बहु कैसी, किसकी बेटी कैसी, किसका पति कैसा आदि—आदि। तो एक दिन क्या हुआ वो बर्तन मांजने वाली नहीं आई तो वो माता तो सारा दिन खिड़की पर बैठी रही सोचती रही पता नहीं क्या हुआ क्यों नहीं आई अभी तक बर्तनों का भी ढेर लग गया है। अब बर्तनों के ढेर की वास्तव में बात नहीं थी वो जो समाचार सुनने का चस्का था उस माता को वो खींच रहा था। जैसे जिसको चाय पीने की आदत होती हो पर टाईम पर चाय ना मिले तो उसे चक्कर आने लगते हैं ऐसे ही इसे चक्कर आ रहे थे तेरे मेरे घर के समाचार ना मिलने से। फिर खिड़की से देखा वो जा रही थी तो माता ने आवाज लगाई कमला इधर आ क्या हुआ आज इतनी लेट हो गई। तो कहने लगी आज बर्तन का टाईम नहीं है प्लीज तो माता ने कहा तू एक मिनट अन्दर तो आ। अब वो आई तो बोली ले इस चौकी पर बैठ जा 5-7 मिनट आराम कर ले चाय पी ले कोई बात नहीं आज मैं ही बर्तन साफ कर लूंगी। अब वो खुद बर्तन साफ कर रही है तथा कमला को कह रही है अच्छा तू सुना कल तूने क्या-क्या किया, कहाँ-कहाँ गई क्या देखा फला-फला घर में कमला खुद चौकी पर बैठकर समाचार सुना रही थी वो खुद नौकरानी बन बर्तन साफ कर रही थी। उसे ये भूल गया कि मैं मालकिन हूँ। अब देखो इधर-उधर के समाचार सुनने के व्यसन से उसका ये हाल। अतः केवल बीड़ी, सिगरेट, शराब या नशीली दवाइयाँ ही व्यसन नहीं हैं व्यसन तो देखने, सुनने, खाने का आदि कई प्रकार का होता है।

एक है निरर्थक रीति रिवाज जिनसे भी परिवारों में कई बार खिट-पिट हो जाती है। फिजूल खर्ची भी एक आम समस्या है। चीज की आवश्यकता नहीं है फिर भी ले रहे हैं क्योंकि आजकल उस चीज का ट्रेंड है इसलिए ले रहे हैं। सब ले रहे थे, हमने भी ले लिया चाहे जरूरत हो या ना हो।

उचित प्रोत्साहन देने की भी कमी बहुत है। कोई को शाबासी दे सराहना करें, हौसला बढ़ायें, उमंग-उत्साह भरे ये आजकल कम ही कोई करता है आपने बहुत अच्छा किया, या आप तो एक दम नया कर रहे हो ऐसा भी सामने से रेसपांड नहीं करते हैं कई लोग।

आजकल कई घरों में सात्विक भोजन भी नहीं लेते हैं यह भी बड़ी समस्या है। सात्विक का मतलब केवल यह नहीं है कि भोजन में अण्डा-मीट आदि ना हो, परन्तु देखने में आया है कि बहुत बार भोजन शाकाहारी होता है परन्तु उतना शुद्ध नहीं होता क्वालिटी वाईज। बहुत बार क्या अधिकतर भोजन बनाने वाले की वृत्ति उतनी सतोप्रधान या सात्विक नहीं होती तथा कई बार तो वह पाक कला में इतना निपुण भी नहीं होता। तथा कुछ नवीनता लायें अपने बनाने में वो भी सिखना नहीं चाहते। नाक में उंगली डाल रहे हैं उसी हाथ से नमक डाल रहे हैं। माना कई तरह की अस्वच्छ अशुद्धि भी होती है। कईयों के घर में तो भोजन के ही झगड़े चलते रहते हैं कि हमारे घर में भोजन में सात्विकता नहीं है। पौष्टिकता पर भी ध्यान नहीं रखा जाता है स्वाद को वरीयता दी जाती है। तबीयत व मौसम को देखकर भोजन तैयार नहीं किया जाता इस प्रकार ये भी बड़ी समस्या है।

एक आम सी समस्या यह भी है कि वृत्ति-दृष्टि और कृति ठीक नहीं है। आज भाई-बहन का भरोसा नहीं है, देवर-भाभी का भरोसा नहीं है, बाप-बेटी का भरोसा नहीं, अडोसी—पडोसी का भरोसा नहीं रह गया है।

आजकल कई मनुष्यों ने स्वयं के बारे में मन्तव्य बना रखे हैं। मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ बस हर समय बस मैं ही मैं है। मैं हर एक को ठिक निगाह से देखता हूँ, मैं हर एक का ठीक हिसाब—किताब रखता हूँ जिससे जो लेना-देना है ठीक समय पर देता हूँ मैं—मैं—मैं इतना ज्यादा हो चुका है कि परिवार में एक समस्या बन गई है।

तो अनेक समस्यायें हैं परिवारों में आप क्या समझते हैं इनसे अलग कोई और समस्यायें हों आप लोगो के ध्यान में तो आप भी बताईये। समस्यायें बहुत हैं, बहुत हैं बिजनैस में भी उतार-चढ़ाव होता रहता है अचानक-अचानक करंसी बढ़ घट जाती अचानक ही सोने का रेट ऊँचा ओर अचानक फिर कम हो गया ऐसी छोटी—छोटी बहुत समस्यायें हैं छोटी-छोटी बातों में कोर्ट जाने की लोग धौंस देते हैं एक-दूसरे को और किसी—

किसी का तो गुजारा नहीं होता एक पत्नी से उसे कोई और 2-4 चाहिए बातें करने के लिए, इधर- उधर आवारा क्लबों में, डांस पार्टीज आदि में जाने के लिए किसी-किसी महिला का भी एक पति से काम नहीं चलता उसके के भी कई पुरुष मित्र होते हैं। माना चरित्रभ्रष्टता भी बहुत बढ़ गई है इस बात पर भी आजकल घरों में बहुत झगड़े होते रहते हैं कई तो ऐसी समस्यायें हैं जो वर्णन भी नहीं की जा सकती बच्चों की समस्या अलग, धनकी समस्या अलग, सेहत की समस्या अलग ऐसी अनेक समस्यायें हैं जो वर्णन भी नहीं की जा सकती है।

अब प्रश्न ये है कि ये समस्यायें तो हैं तो क्या इनका हल भी है? है हल ? आप क्या समझते हो समस्यायें ठीक हो जायेगीं नहीं समस्यायें तो ओर ही बढ़ेंगीं। जब मनुष्य सत्यता के एक दम बिल्कुल विपरित जा रहा है तो समस्यायें तो बढ़ेंगी ही ये तो बाबा कहते ये तो कम्पीटिशन है सात्विकता ओर तामसिकता का। अपने अन्दर सात्विकता को बढ़ाकर ही हम तामसिकता का सामना कर सकते हैं। ऐसे नहीं की समस्याओं से जूझते-2 अपनी आंतरिक शांति-शक्ति को गँवाकर समस्याओं का हल करने की कोशिश करें। स्थिति से ही हम आगे बढ़ सकते हैं अन्य कोई उपाय नहीं है आगे बढ़ने का।

एक बार बाबा से भी पूछा था कि बाबा समस्यायें दिनों-दिन बढ़ रही हैं तब क्या किया जाए? आज दो लोगों के संस्कार भी एक नहीं हो पा रहे हैं? तब बाबा ने कहा था कि संस्कार एक जैसे न थे, न हैं ना होंगे, ये सत्य बात है। ये सत्य बात है संस्कारों में भिन्नता तो रहेगी ही। बाबा ने यह भी कहा था कि संस्कारों में टक्कराव तो अंत तक रहेगा ही तो क्या फिर टक्कर खाते-2 ही जीवन बिता देंगे। तो बाबा ने बहुत सुन्दर समाधान बताया था कि कभी भी किसी के साथ संस्कार मिलाने की कोशिश मत करो मिलान करने में कही-2 भिन्नता रह जायेगी जहाँ भी भिन्नता रहेगी वही टक्कराव आ जायेगा। आप बाप के साथ अपने को मिलाओ। अगर आप के संस्कार बाप के साथ मिलते चले जायेंगे तो किसी के साथ मिलान करके चलना मुश्किल नहीं लगेगा। अगर आप इंसानो से अपने को मिलाने लग जाओगे तो इंसान-इंसान के साथ मेल नहीं खाता है इसलिए टक्कराव होगा और आप कभी भी मिलान करके चल नहीं पाओगे। अगर बाबा से मिलायेंगे तो बाबा क्या है बाबा प्यार का सागर है, कृपा का भण्डार है, रहमदिल, दयालु, कृपालु है कितने ईश्वरीय गुण हैं जो बाबा के गुण हैं वही तो मेरे गुण हैं वो ही तो मेरी जायदाद है, वो ही मेरा तिजोरी में रखा हुआ खजाना है। उस खजाने को अगर हम अपना बना लेंगे तो किसी के साथ चलने में कभी भी कठिनाई नहीं होगी। लेकिन अगर हम किसी के साथ मिलाने की कोशिश करेंगे तो बाबा के ये बोल हैं कि बच्चे संस्कार तो अन्त तक नहीं मिलेंगे ओर टक्कराव होगा। अतः टक्कराव से बचने के लिए बाप समान बनने की कोशिश करें। इसलिए बाबा का एक शब्द पहले-2 चलता था कि आप समान बनाओ आप समान बनाओ। लेकिन बाद में बाबा ने उसे कट करके कहा बाप समान बनाओ। बाप समान बनो तथा बाप समान बनाओ तो ही काम चलेगा।

अब इन का समस्याओं का समाधान क्या है? हर समस्या को आप लेते जाओ। सबसे पहले मैं लेती हूँ घर के वातावरण का ठीक ना होना। वातावरण को ठीक करने के लिए अगर मैं समझूँ कि हमारे घर परिवार में सारे ठीक होने चाहिए तो वातावरण शान्त होगा व सुधरेगा। अब ना तो सारे कभी ठीक हुए हैं और ना ही ठीक होंगे। सतयुग में ठीक थे सारे फिर भी नम्बरवार थे। आज ऐसे ही ठीक सारे हैं परन्तु नम्बरवार हैं। अतः यदि मैं नम्बरवन से मिलाकर वातावरण बनाने की कोशिश करूँगी तो क्या वातावरण बनेगा। जो मैं चाहती हूँ क्या जो मैं चाहती हूँ क्या दूसरा भी वैसा ही चाहेगा? दो की चाह हमेशा एक जैसी नहीं होती है। अतः वातावरण को ठीक करने के लिए मुझे स्वयं को एक मूर्ति बनना है। एक मंदिर के अन्दर एक मूर्ति होती है ओर मंदिर में उसका पुजारी होता है। पुजारी के लिए एक कमरा भी बना होता है जिसमें वो अपने बीबी व बच्चों को भी ले आता है। फिर बहु-बेटा भी मंदिर में ही रख लेता है। लेकिन फिर भी वो स्थान मंदिर ही कहलाता है। कारण क्या कारण एक मूर्ति। अतः घर एक मंदिर है। मैं मूर्ति हूँ। मैं मूर्ति बनकर रहूँ ये नहीं ये बहुत मुश्किल है ना मैं मूर्ति थी ही, हूँ ही मूर्ति। मुझे मेरे बाबा ने पहचान दे दी कि बच्चे तू ही देवता था। तुझे मैं फिर से देवता बनाने आया हूँ देवता वाली आत्मायें ही आयेगी। दूसरी आत्मायें आयेंगी ओर चली जायेंगी। वो देवता नहीं बनेगी। तुमने निरंतरता बना कर रखनी है अब तुम ये क्यों सोचते हो कि क्या मैं ही देवता बनूँगा केवल। नहीं ये सोचो मैं ही देवता था — मैं ही हूँ। मुझे ही इस घर में देवता बन कर रहना है। देखो पत्थर की जड़-मूर्ति जहाँ रखी जाती है वो सारा स्थान मंदिर बन जाता है- मंदिर कहा जाता है तो क्या जहाँ चैतन्य में देवता विराजमान है वो घर मंदिर नहीं बन जायेगा? हो सकता है मूर्ति बार-2 खंडित हो जाती हो, तथा खंडित मूर्ति को

पूजा योग्य नहीं समझा जाता है। यही कारण है कि हम बार-2 खंडित हो जाते हैं क्योंकि हम अपना मिलान दूसरों से करते हैं मैं ही हमेशा चुप रहूँ? इनको नहीं रहना है? अब मूर्ति कभी ऐसा कहती है क्या। वो बोलती नहीं है परन्तु उस का खड़ा होना, उसके नैन चेहरे से कितने श्रेष्ठ वायब्रेशन आते हैं। मुझे तो बाबा ने स्मृति दिलाई है तुम ही देवता थे तुम्हें ही मैं फिर से बनाने आया हूँ। बनाने आया हूँ का मतलब है कि मुझे अब बनकर रहना है। अतः वातावरण को ठिक रखने के लिए अब मुझे अपनी वृत्तियों को तथा वातावरण को ठीक रखना है। मेरी वार्ता में कभी ज्यादा शब्द होते हैं, कभी सम्मानीय शब्द नहीं होते, कभी मधुर शब्द नहीं होते हैं कभी किसी को शिक्षा देने के शब्द होते हैं लेकिन शिक्षा स्वरूप के शब्द नहीं होते हैं। इससे क्या होता है कि मेरे स्वयं की वार्ता ठीक न होने से वातावरण प्रदूषित होता रहता है। नम्बरवार तो सब है ही परन्तु मुझे निमित्त बनना है ये कभी भुल नहीं जाये। अब मैं ये जो कह रही हूँ देवता बनना है ये तो हमें नॉलेज है घर परिवार वालों को थोड़े ही नालेज है तो उनको ऐसे समझाये कि देखो घर में अशांत वातावरण है या निन्दा करने वालों का वातावरण है तो आपको बुरा लगता है ना तो कहेंगे हाँ मुझे बहुत बुरा लगता है तो बाकियों को भी बुरा लगता है? तो कहेंगे पता नहीं लगता है या नहीं लगता है- मुझे नहीं लगता उन्हे घर का वातावरण बुरा लगता होगा-अगर लगता तो ऐसा क्यों करते? परन्तु जरूर बुरा लगता है। तो हम उनको ये स्पष्ट कर सकते हैं कि आपको बुरा क्यों लगता है क्योंकि आप में अभी तक श्रेष्ठ गुण व लक्षण झांक कर ये बताते हैं कि ये ठिक नहीं है? अतः आप अपने आपको घर के अन्य सदस्यों से तुलना ना करें। उनसे अपना मुकाबला ना करें क्योंकि आप में जो गुण हैं वो उन के अन्दर नहीं हैं तो आप तो गुणों की प्रतिमा हैं। आप अपने को उनसे तुलना करते हो इसलिए आप को कष्ट होता है। आप मिलान उन से किजिए जो आप से ऊंच हैं ताकि ऊंचाई के गुण हम अपने में ला सकें निचाई वालो से तुलना करेंगे तो आप के गुण घटने शुरु हो जायेंगे। तथा नीचे वालों के अवगुण आप में आने शुरु हो जायेंगे अतः कहीं अच्छों से मिलान करना होता है कहीं बुरों से भी करना होता है अब ये देखना है होता है। देखो आप को लगता है जल्दी उठना चाहिए, घर का वातावरण शान्त होना चाहिए। परिवेश साफ-सुथरा हो। पर्यावरण स्वच्छ हो, स्वस्थ हो, ये आपको लगता है इसका मतलब आप गुणों की मूर्त हो। अतः आप गुणों की मूर्त ही बन कर रहो, परेशान न हो जाओ, अशान्त न हो जाओ। देखो पत्थर की प्रतिमा गुण है वो अपनी-2 डिमाण्ड रखते जाते हैं। डिमाण्ड भी हर एक की अलग-2 प्रकार की होती है। कोई धन मांगता है, कोई बच्चा मांगता है, कोई सफलता मांगता है माना किस्म -2 की मांग होती है परन्तु मूर्ति वरदानी बनकर स्थिर स्थिर खड़ी रहती है अतः आप भी ऐसे ही बन कर रहो, यह नहीं सोचो की सब की इच्छायें ही इच्छायें हैं। सब हम से हमसे ही अपेक्षायें रखते हैं अपने आप कुछ करते धरते नहीं हैं नहीं आप अपने मन से अन्दर ही अन्दर कहो कि प्रभु आपकी सर्व इच्छायें पूर्ण करे। आपकी श्रेष्ठ कामनायें सब पूर्ण हों। आपके हाथ में भल पैसा नहीं है चीज नहीं है पर मन में भावनाएं तो हैं। अतः आप मंगल भावनायें तो रख सकते हैं ना आपकी श्रेष्ठ मनःस्थिति की भावनाएं उनकी कामनाओं को जरूर पूर्ण करेंगी। आज नहीं तो कल या कभी ना कभी जरूर पूरी होंगी। तथा वे आपसे में स्पष्ट भी नहीं होंगे। अतः घर के वातावरण को ठिक रखने के लिए आप औरों से अपेक्षा न रखो। आप जो कर सकते हो वो करो।

होता क्या है हम औरों से आशायें रखते हैं कि ये ऐसा करे बहुत अच्छी बात है। हम कह सकते हैं कि ऐसा करो तो जो चाहते हो वैसा हो जायेगा। अच्छा वो कहें हाँ हो सकता है ऐसा, पर आप मुझे ही क्यों कह रहे हो घर में ओर भी तो हैं उन्हे नहीं कह सकते हो। मुझे ही कहना आता है क्या आपको? आजकल तो किसी को इशारा भी दो तो वो दुसरे की तरफ इशारा करता है कि आपको सब शिक्षायें मुझे ही देनी है दूसरे को कोई शिक्षा नहीं देनी है ये तो आपका सगा है, मैं तो सोतैला हूँ। ना जाने कहा से मुझे उठा कर ले आए न जाने क्या-क्या सुना देते हैं आजकल के बच्चे परन्तु हमारे मन की भावना एकदम श्रेष्ठ रहें। नहीं बेटा आप ही मेरी उम्मीद हो, आप अच्छे ही हो अच्छा ही करोगे। आप की इच्छाएं पूरी होंगी ही उसके लिए मैं भगवान से प्रार्थना करुगी कि आप की अच्छी इच्छायें जल्दी पूरी हों। भले मेरी आज हस्ती नहीं है कार की, अच्छे मकान की परंतु मैं भगवान से अवश्य प्रार्थना करुगी कि मेरा बेटा अच्छी कार में घूमें, अच्छा बंगला हो उसके पास। माना कैसे भी करके घर के तनावमय, अशान्त माहौल को खुशनुमा बना कर रखना है। ये मेरी जिम्मेदारी है। पर हम तरह-2 की बच्चों की डिमांड सुनकर खुद ही परेशान हो जाते हैं अच्छा हम उन की डिमांड पूरी नहीं कर सकते, माना मीठा नहीं दे सकते पर मीठे वचन तो बोल सकते हैं इतना तो कर दो। ऐसा नहीं की वो डिमांड ले कर आयें और आप रिजक्ट कर दो। मानो आप की हस्ती नहीं है डिमांड पूरी करने की चलो आप पूर्ण विश्वास नहीं दे सकते